



रीतिकालीन काव्य

प्रस्तुतकर्ता: विजय लक्ष्मी कुमावत

व्याख्याता, हिंदी साहित्य

स्वामी विवेकानंद महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

सेमेस्टर 3



रीतिकाल का परिचय

कालखंड

रीतिकाल लगभग 1600 ई. से 1850 ई. तक का काल है। यह हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग है जो भक्तिकाल के उपरांत प्रारंभ हुआ।

नामकरण

इस युग को 'रीतिकाल' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें काव्य की रीतियों, नियमों और परंपराओं का विशेष महत्व दिया गया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुगल साम्राज्य के दौरान सांस्कृतिक संरक्षण और राजसभाओं में कवियों की उपस्थिति ने इस युग को जन्म दिया। धार्मिक उत्साह के स्थान पर कलात्मकता और सौंदर्य की प्रधानता रही।

रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ



कलात्मकता

काव्य को कला के रूप में प्रस्तुत करने पर बल। भावानुभूति से अधिक शिल्प कौशल पर ध्यान।



श्रृंगारिकता

श्रृंगार रस का प्रभुत्व। प्रेम, विरह, सौंदर्य वर्णन प्रमुख विषय।



आश्रयदाता प्रशंसा

राजा-महाराजाओं की स्तुति। संरक्षक के प्रति आभार व्यक्त करना।

रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ



विषयवस्तु

श्रृंगार रस प्रधान विषय, प्रेम और विरह का काव्यात्मक चित्रण, सौंदर्य संगीतमयता



शैलीगत नवीनताएँ

रीतियों का विकास, अलंकारों का समृद्ध प्रयोग, अनुप्रास और यमक की प्रधानता



काव्य प्रकार

सवैया, कवित्त, चौपाई छंदों का प्रयोग, दोहा और रोला विधाएँ

रीतिबद्ध काव्य

परिभाषा

रीतिबद्ध काव्य वह है जो काव्य शास्त्र की सभी रीतियों, नियमों और परंपराओं का पालन करता है। यह शास्त्रीय मानदंडों के अनुसार रचित होता है।

प्रमुख कवि

- केशवदास - कुम्भनदास के गुरु
- गोपाल भट्ट - केशव के शिष्य
- रत्नाकर - राजा जयसिंह के कवि

रीतिबद्ध काव्य शास्त्र की सीमाओं में बँधा रहता है। यह नियमों के अंतर्गत सौंदर्य की सृष्टि करता है।





रीतिसिद्ध काव्य

परिभाषा

रीतिसिद्ध काव्य वह है जो रीति को स्वीकार करता है पर नियमों से मुक्त रहता है। यह रीति के साथ स्वतंत्रता का संतुलन बनाता है।

प्रमुख कवि

बिहारीलाल, घनानंद, मतिराम - ये कवि रीति को जानते थे पर अपनी स्वाभाविक प्रतिभा के लिए प्रसिद्ध हैं।

उदाहरण

बिहारी के सतसई की पंक्तियाँ रीतियों के साथ स्वाभाविक भाव का संगम हैं। यह रीतिबद्धता के बावजूद माधुर्य से परिपूर्ण हैं।

रीतिमुक्त काव्य

परिभाषा

रीतिमुक्त काव्य वह है जो शास्त्रीय रीतियों से पूर्णतः मुक्त होता है। यह प्राकृतिक प्रतिभा और स्वच्छंद भाव की अभिव्यक्ति है।

प्रमुख कवि

- भूषण - शाहजहाँ के कवि
- सूर्यमल्ल मिश्रन - राजस्थानी कवि
- रामनरेश त्रिपाठी

विशेषताएँ

- रीति-नियमों का निषेध
- स्वाभाविक भाव प्रधानता
- मौलिकता और मौलिक अनुभूति



रीतिकाल के प्रमुख कवि



केशवदास

रीतिकाल के जनक माने जाते हैं।
रसिकप्रिया और कविप्रिया जैसे ग्रंथ रचे।
श्रृंगार के विविध रूपों का वर्णन किया।



बिहारीलाल

सतसई के रचयिता। छोटी-छोटी पंक्तियों
में गहरा भाव। रीतिसिद्ध परंपरा के
प्रणेता।



घनानंद

रीतिसिद्ध शैली के उत्कृष्ट कवि।
स्वाभाविकता और कलात्मकता का
संतुलन।



भूषण

रीतिमुक्त काव्य के प्रवर्तक। छलिया
छबीला छीर छीरा जैसे महाकाव्य रचे।

रीतिकालीन काव्य का महत्व

शिल्प संपन्नता

हिंदी काव्य की शिल्पगत समृद्धि। अलंकारों और छंदों का विकास।



पुल का कार्य

भक्तिकाल से आधुनिक काल की दिशा में संक्रमण। नवीन विचारधाराओं की नींव।



साहित्यिक विविधता

विभिन्न प्रवृत्तियों का विकास। रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त की स्थापना।



सौंदर्य बोध

श्रृंगार रस के माध्यम से सौंदर्य की अभिव्यक्ति। कलात्मक संवेदना का विकास।



निष्कर्ष

01

रीतिकाल का समग्र मूल्यांकन

रीतिकाल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग है जिसने काव्य शिल्प को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया।

02

त्रिविध प्रवृत्तियाँ

रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त - ये तीनों प्रवृत्तियाँ काव्य की विविधता लाईं।

03

शाश्वत प्रभाव

रीतिकाल के काव्य संस्कार आधुनिक हिंदी काव्य पर आज भी स्पष्ट दिखाई देते हैं।

रीतिकाल ने हिंदी काव्य को शास्त्रीय आधार दिया और कलात्मक सौंदर्य की नई परिभाषा रची। यह भक्तिमूलक भावना से लेकर कलात्मक शिल्प तक का सुंदर संक्रमण था।